**International Journal of Humanities and Social Science Research**
**www.socialsciencejournal.in**
**ISSN: 2455-2070**
**Received: 28-04-2025, Accepted: 29-05-2025, Published: 13-06-2025**
**Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 80-86**

# हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति

**मोहम्मद आकिफ तौफीक[1], डा शमीम राईन[2]**
[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, विभाग राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला महाविद्यालय औराई भदोही, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] प्रोफेसर, विभाग राजनीति विज्ञान सकलडीहा स्नातकोत्तर महाविद्यालय चन्दौली, उत्तर प्रदेश, भारत

**सारांष**
चीन की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति में स्थल की तुलना में समुद्र को कम महत्व दिया जाता था। क्योंकि माओ के नेतृत्व में साम्यवादी विजय एक स्थलीय विजय थी। नौसेना स्थल सेना का ही एक अंग थी परन्तु जब राष्ट्रवादी कोमिन्तांग की सरकार ताइवान द्वीप पर जा बैठी तब चीन का ध्यान ताइवान की ओर से होने वाले समुद्र सुरक्षा चुनौतियों की ओर गया। आर्थिक विकास की गति ने चीन को नौसैन्य आधुनिकीकरण और मैरीटाइम सुरक्षा की ओर उन्मुख किया। आयातित ऊर्जा संसाधनों की आपूर्ति और विनिर्मित वस्तुओं की वैश्विक पहुंच उसके आर्थिक विकास का आधार बन गया। चीन में साम्यवादी शासन की वैधता की आर्थिक विकास की गति पर निर्भर बन गयी। चीन की मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति का एतिहासिक विकास तीन चरणों में हुआ। पहले चरण में चीन ने तटीय सुरक्षा पर बल दिया। परन्तु आर्थिक सुधार और खुलेपन की नीति को अपनाने के बाद चीन की मैरीटाइम रणनीति अपने दूसरे चरण अर्थात अपतटीय वास्तविक सुरक्षा में परिवर्तित हो गयी। चीन की मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति का तीसरा चरण वैश्विक आर्थिक मंदी के बाद जब अमरीका के आर्थिक विकास की गति में सापेक्षिक गिरावट को रणनीतिक अवसर के रूप में देखकर सुदूर समुद्र संरक्षण की रणनीति में प्रवेश कर गयी। इस समय चीन के रिज्युविनेशन को प्राप्त करने के लिए चीन ने मैरीटाइम महान शक्ति बनने का लक्ष्य रखा। तीव्र नौसैन्य आधुनिकीकरण चीन के नौसैन्य राष्ट्रवाद का अभिन्न अंग बन गया। इस चरण में चीन ने दो समुद्र की रणनीति का अनुसरण किया। पस्चिमी प्रशान्त महासागर में चीन का लक्ष्य ताइवान का मुख्य भूमि में एकीकरण, पूर्वी चीन सागर, दक्षिणी चीन सागर में अपने संप्रभुतागत दावों के रक्षण, मैरीटाइम अधिकारों एवं हितों को राष्ट्रीय संप्रभुता का अभिन्न अंग घोषित किया गया। निकट समुद्र में आर्थिक विकास की गति में वृद्धि के साथ चीन के मैरीटाइम व्यवहार में आक्रामकता का समावेश होता गया। और लो–प्रोफाइल रणनीति का त्याग करके स्ट्राइविंग फार एचीवमेंट्स कर दिया गया। चीन की अर्थव्यवस्था जब पूर्णतः निर्यात उन्मुख अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हुई तो ऊर्जा आवश्यकताओं में वृद्धि ने चीन को आयातित ऊर्जा आपूर्ति को सुनिश्चित बनाने, ऊर्जा आपूर्ति की सुनिश्चित पहुंच के वैकल्पिक मार्गों एवं ऊर्जा आपूर्ति के वैकल्पिक स्रोतों के प्रयास के रूप में गो–ग्लोबल की रणनीति पर बल देने लगा। हिन्द महासागर में चीन की रणनीति पूर्वी हिन्द महासागर में मलक्का दुविधा के निवारण, उत्तरी हिन्द महासागर में युद्ध अथवा किसी आकस्मिकता की स्थिति में भारत अथवा अमरीका द्वारा उत्पन्न बाधा से स्लाक्स का संरक्षण, पस्चिमीं हिन्द महासागर में मध्य–पूर्व एवं अफ्रीका से आयातित ऊर्जा संसाधनों को बाब–अल–मन्देब, हारमुज़ जैसे संकरे चोकप्वांइट्स में पायरेसी, आतंकवाद से संरक्षण पर केंद्रित है। हिन्द महासागर में चीन की मैरीटाइम रणनीति का लक्ष्य आर्थिक विकास, ऊर्जा आवश्यकता, नवीन बाज़ार पहुंच, चीन के दक्षिण पूर्वी एवं दक्षिण पस्चिमी लैंड लाक्ड प्रान्तों की हिन्द महासागर तक भूमि पहुंच सुनिश्चित करना है। इस शोध–पत्र में हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत की मैरीटाइम परिधि के निकट पड़ोस में चीन के बढ़ते मैरीटाइम पदचिन्ह /मैरीटाइम प्रोफाइल/नौसैन्य गतिविधियों में सक्रियता के कारण उत्पन्न भारत की चिन्ताओं को रेखांकित करने का प्रयास निहित है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत की रणनीतिक चिन्ताओं के मैरीटाइम पक्ष की व्याख्या करनी है। अर्थात हिन्द महासागर क्षेत्र की सुरक्षा के मैरीटाइम पक्ष के स्वरूप का उल्लेख करना है। क्योंकि चीन हिन्द महासागर क्षेत्र की एक विश्वसनीय शक्ति बनने के लिए भारत के परम्परागत प्रभाव क्षेत्र को कम करना चाहता है। हिन्द महासागर के परम्परागत शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में करना चाहता है। हिन्द महासागर में भारत की भौगोलिक लाभ की स्थिति को घटाकर अपनी स्थायी नौसैन्य उपस्थिति को कायम करना चाहता है। रणनीतिक दृष्टिकोण से भारत को चारों ओर से घेरने का प्रयास कर रहा है ताकि भारत के साथ सीमा विवाद अथवा ताइवान एकीकरण को लेकर होने वाली किसी आकस्मिकता की स्थिति में स्लाक्स संरक्षण संकट और चोकप्वाइंट्स की संभावित नाकेबंदी से निपटने में सक्षम बन सके। चीन पाकिस्तान को आर्थिक एवं सैन्य आधार पर पोषित करके उसे भारत के उदय के विरुद्ध प्रयुक्त करने का इरादा रखता है ताकि एशिया में चीन के प्रभुत्व को कोई चुनौती न दे सके।

**मूलषब्द:** ऊर्जा सुरक्षा, परम्परागत प्रभाव क्षेत्र, भौगोलिक लाभ, एंटी–पायरेसी अभियान, चोकप्वाइंट्स, स्लाक्स संरक्षण, मलक्का की दुविधा, नाकेबंदी, निर्यात उन्मुख अर्थव्यवस्था, भू–आवेष्ठित क्षेत्र, चीन–पाकिस्तान धुरी, मैरीटाइम पुनर्गठबन्धन

अल्फ्रेड टेलर महान ने कहा था कि हिन्द महासागर पर नियंत्रण करने वाला एशिया को प्रभावित करेगा। अर्थात हिन्द महासागर एशिया पर प्रभुत्व की कुंजी है। 21वीं शताब्दी का भाग्य हिन्द महासागर में निर्धारित होगा। महान की यह भविष्यवाणी सिद्ध होना बाकी है परंतु हिन्द महासागर परिधि के राष्ट्रों के आर्थिक एवं सुरक्षा आयामों पर इस जल क्षेत्र का बहुत प्रभाव है। एक भौगोलिक इकाई के रूप में हिन्द महासागर भूमि से तीन ओर से घिरा है। एशिया का दक्षिणी छोर एक छत के समान है जो हिन्द महासागर को एक भू–आवेष्ठित महासागर बनाता है। भारतीय उपमहाद्वीप हिन्द महासागर को अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी में विभाजित करता है। हिन्द महासागर एशिया की मुख्य भूमि से एक लंबी पर्वत श्रृंखला हिंदूकुश, पामीर, काराकोरम, हिमालय, बर्मा के उत्तरी पहाड़ से अलग होता है। अफ्रीका महाद्वीप की ओर से दक्षिण अफ्रीका से एथियोपिया तक के राष्ट्र हिन्द महासागर का सामना करते हैं। म्यामांर एवं थाई सीमाओं पर पहाड़, मलय के पठार और इंडोनेशियन द्वीप श्रृंखला हिन्द महासागर को प्रशान्त महासागर से अलग करती हैं। ऑस्ट्रेलिया हिन्द महासागर का दक्षिण पूर्वी खंबा कहलाता है। हिन्द

महासागर एक बन्द महासागर है क्योंकि इसमें लम्बी दूरी पर सीमित प्रवेश/निकास बिन्दु स्थित हैं। इसी कारण हिन्द महासागर की पूर्वी–पस्चिमीं समुद्र परिवहन लाइन अर्थात स्लाक्स निषेध/नाकेबन्दी के प्रति संवेदनशील हैं।

हिन्द महासागर के तीन तरफ का महाद्वीपीय भूभाग इसमें प्रवेश/निकास के तीन मुख्य द्वार उपलब्ध कराता है जो रणनीतिक दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। पहला मलक्का–जलसंधि दक्षिण पूर्वी प्रवेश/निकास द्वार है। दूसरा केप आफ गुड होप के पास दक्षिण पस्चिमीं प्रवेश/निकास द्वार है। तीसरा स्वेज नहर उत्तरी पस्चिमीं प्रवेश/निकास द्वार है। यद्यपि सुन्डा जलसन्धि, लोम्बोक जलसन्धि, मकस्सार जलसन्धि और ऑस्ट्रेलिया की ओर से नौ–परिवहन की स्वतंत्रता का विकल्प उपलब्ध है। परन्तु भौगोलिक दृष्टि से इन विकल्पों द्वारा परिवहन करना अत्यंत कठिन है। साथ ही लम्बी दूरी तय करने के कारण अधिक समय एवं आर्थिक बोझ के कारण यह नौ–परिवहन मार्ग अधिक प्रयोग में नहीं हैं। हिन्द महासागर के महत्त्वपूर्ण पूर्वी एवं पश्चिमी स्लाक्स पूर्व में मलक्का–जलसंधि और पस्चिम में अदन की खाड़ी में बाब अल मन्देब जलसन्धि और फारसी की खाड़ी में हारमुज़ जलसन्धि पर आश्रित हैं। हिन्द महासागर से गज़रने वाला ऊर्जा आपूर्ति/विनिर्मित वस्तुओं की आपूर्ति परिवहन ट्रैफिक रणनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण इन तीनों चोकप्वांटस पर आश्रित है। इसी कारण मलक्का, बाबअल मन्देब, हारमुज़ को वैश्विक नौ–परिवहन की गर्दन का ढक्कन कहा जाता है। हाल के दिनों में केप आफ गुड होप के विकल्प को प्रयोग किया जा रहा है।

हिन्द महासागर के रणनीतिक महत्व के कारण उपनिवेशवादी शक्तियों पुर्तगाल, डच, फ्रेंच और ब्रिटिश ने अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया था। दशकों के संघर्ष के बाद ब्रिटेन ने पुर्तगाल के प्रभाव को हिन्द महासागर से समाप्त करके अपना प्रभुत्व स्थापित किया। प्राकृतिक संसाधनों के दृष्टिकोण से हिन्द महासागर का वैश्विक महत्व है। हिन्द महासागर की परिधि में स्थित राष्ट्रों के पास विश्व के 2/3 उर्जा संसाधनों के भंडार हैं अमरीका और चीन जैसे विश्व के बड़े ऊर्जा उपभोक्ता राष्ट्रों की ऊर्जा आपूर्ति हिन्द महासागर के स्लाक्स पर निर्भर है। ऊर्जा आवश्यकताओं की सुनिश्चित बाधारहित आपूर्ति की चिंता ने हिन्द महासागर को इन राष्ट्रों की मैरीटाइम रणनीति का केन्द्र बना दिया है। ऊर्जा आवश्यकताओं की उभरती चिन्ता के कारण नौसैन्य आधुनिकीकरण ने हिन्द महासागर क्षेत्र की सुरक्षा गतिशीलता को प्रभावित किया है। क्योंकि ऊर्जा सुरक्षा, स्लाक्स संरक्षण, नौसैन्य आधुनिकीकरण निवेश, सुदूर समुद्री हित संरक्षण, सुदूर नौसैन्य उपस्थिति में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है।

हिमालय की भौगोलिक/प्राकृतिक बाधा के कारण चीन दक्षिण एशिया की मुख्य भूमि से कटा हुआ है परन्तु चीन दक्षिण एशिया के चार राष्ट्रों भारत, पाकिस्तान, नेपाल,भूटान के साथ स्थल सीमा साझा करता है। दक्षिण एशिया में चीन की सक्रियता का प्रमुख कारण बाह्य बाज़ार अर्जन द्वारा अपने विनिर्मित उत्पादों/सैन्य उपकरणों की आपूर्ति केन्द्र की तलाश है। ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों की खोज भी चीन की दक्षिण एशिया में रूचि का प्रमुख कारण है। अतः दक्षिण एशिया में भारत के परम्परागत प्रभाव को कम करने हेतु उसके पड़ोसियों के साथ द्विपक्षीय मतभेदों को साधन के रूप में प्रयुक्त करके छोटे राष्ट्रों को भारत के विरुद्ध खड़ा कर रहा है। चीन की पाकिस्तान से निकटता जिसे चीन–पाकिस्तान धुरी कहा जाता है, भारत विरोध पर आधारित है। चीन की भारत के प्रति नीति में पाकिस्तान संतुलनकारी भूमिका निभाता है। इसी कारण चीन आर्थिक सहायता/सैन्य आपूर्ति द्वारा भारत के विरुद्ध पाकिस्तान को मज़बूत बना रहा है। भारत चीन की तुलना में इन छोटे राष्ट्रों की अधिक आर्थिक सहायता नहीं कर सकता है क्योंकि आर्थिक एवं सैन्य मोर्चे पर भारत चीन से काफी पीछे है। चीन ने सैन्य आधुनिकीकरण के द्वारा नील जल सैन्य क्षमता अर्जित कर चुका है। अतः चीन हिन्द महासागर में सैन्य क्षमता का प्रदर्शन कर सकता है।

चीन की मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति का प्राथमिक ध्यान ताइवान के एकीकरण, पूर्वी चीन सागर, दक्षिणी चीन सागर में अपने मैरीटाइम दावों का संरक्षण और पस्चिमीं प्रशान्त महासागर/पूर्वी एशिया में अमरीका की अग्रिम उपस्थिति को कम/शून्य करने पर केंद्रित है परन्तु चीन हिन्द महासागर क्षेत्र की महत्वपूर्ण स्लाक्स के सहारे आवश्यक सपोर्ट सिस्टम सुविधा विकसित कर रहा है। क्योंकि इन्हीं स्लाक्स की सुरक्षा पर चीन की ऊर्जा आवश्यकता, आर्थिक विकास, निर्यात उन्मुख अर्थव्यवस्था का भविष्य निर्भर है। चीन हिन्द महासागर में अपनी सरल पहुंच सुनिश्चित/अभिवृद्धि करना एवं अपनी सैन्य उपस्थिति बढ़ाना/स्थायी करने पर केंद्रित है। चीन द्वारा भारत को अपने बैकयार्ड में ही किनारे करने की नीति का अनुसरण किया जा रहा है। हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन की मैरीटाइम गतिविधियां/प्रभाव/सक्रियता भारत की तुलना में अत्यधिक बढ़ रही हैं। यद्यपि भारत ने भी चीन की मैरीटाइम गतिविधियों को संतुलित करने हेतु नेबरहुड फर्स्ट और एक्ट ईस्ट की नीति का अनुसरण आरम्भ किया है। परन्तु भारत की तुलना में चीन का स्थलीय सीमा/महाद्वीपीय मोर्चा अपेक्षाकृत शान्त/सुरक्षित है। अतरू चीन की सुरक्षा रणनीति में स्थल की तुलना में समुद्र पर अधिक ध्यान केंद्रित है। जबकि भारत का अपने पड़ोसियों से विवाद अपने स्वरूप में स्थलीय/ महाद्वीपीय है। जबकि चीन द्वारा भारत एवं भूटान को छोड़कर अपने अधिकांश पड़ोसियों के साथ भूमि सीमा विवादों का समाधान किया जा चुका है। वर्तमान में चीन का अपने पड़ोसियों के साथ सीमा विवाद अपने स्वरूप में मैरीटाइम है।

मैरीटाइम दक्षिण एशिया में भारत के आकार, जनसंख्या, भौगोलिक स्थिति, सांस्कृतिक जुड़ाव, साझा इतिहास इत्यादि के कारण चीन की तुलना में हिन्द महासागर का यह क्षेत्र भारत का परम्परागत प्रभाव क्षेत्र रहा है। परन्तु एतिहासिक/सांस्कृतिक समानता होते हुए भी अपर्याप्त आधारभूत संरचना/अनेक कस्टम बाधाओं/द्विपक्षीय व्यापार घाटा के कारण भारत के साथ उसके निकट पड़ोसियों की व्यापारिक/सैन्य भागीदारी बहुत कम/सीमित है। जबकि भारत की तुलना में दक्षिण एशिया के राष्ट्रों के साथ चीन की व्यापारिक, आर्थिक, सैन्य भागीदारी एवं निवेश में नाटकीय अभिवृद्धि हुई है। चीन का भारत के पड़ोसियों के साथ वृहत आदान–प्रदान भारत की परम्परागत स्थिति को चुनौती देती है। भूटान को छोड़कर पाकिस्तान के साथ–साथ श्रीलंका, बंग्लादेश, नेपाल, मालदीव सभी आर्थिक लाभ के लिए भारत की तुलना में चीन के अधिक निकट हैं। मैरीटाइम दक्षिण एशिया का अधिकांश भाग चीन के प्रभाव क्षेत्र में आ गया है। चीन के आर्थिक राजनय से यह छोटे राष्ट्र भारत की तुलना में चीन की तरफ अधिक आकर्षित हुए हैं। यह सभी राष्ट्र एक लम्बे समय तक भारत के प्रभावाधीन रहे हैं। चीन की तुलना में भारत के पास अपने पड़ोसियों के प्रति कूटनीतिक दायित्व की पूर्ति हेतु पर्याप्त संसाधनों का अभाव है। साथ ही साथ चीन के प्रयासों को काउंटर करने हेतु भारत के कूटनीतिक क्रियाकलाप अनियमित हैं। मालदीव संकट भारत के प्रभाव क्षेत्र में चीन के अतिक्रमण का एक स्पष्ट उदाहरण है। मैरीटाइम दक्षिण एशिया में भारत चीन के सापेक्ष हीनता की भावना से ग्रस्त है। नेपाल एक लम्बे समय तक भारत का संरक्षित राज्य रहा है परन्तु चीन नेपाल में भी अपनी गतिविधियों में अभिवृद्धि कर रहा है।

भारत की तुलना में चीन का नौसैन्य विनिर्माण/नौसैन्य आधुनिकीकरण द्वारा अर्जित नौसैन्य परिसम्पत्ति/क्षमता अपने स्वरूप/मात्रा/गुणात्मकता/अन्तर्राष्ट्रीय मानक में बहुत आगे है। चीन एक मैरीटाइम महान शक्ति बनने की अनिवार्य आवश्यकता

के रूप में मैरीटाइम दक्षिण एशिया का नेतृत्व चाहता है। वह दक्षिण एशिया को चीन के हितों के अनुरूप ढालने का प्रयास कर रहा है। दक्षिण एशिया में एक सुरक्षित रणनीतिक लाभ चाहता है। भारत की केंद्रीय भूमिका एवं भौगोलिक लाभ की स्थिति को कमज़ोर करना चाहता है। यद्यपि चीन दक्षिण एशिया में विवाद/संघर्ष से बच रहा है परन्तु चुनौतियों के उपस्थित होने पर पूर्ण प्रतिकार करने की क्षमता अर्जित कर चुका है। चीन ने जिबूती में अपने प्रथम विदेशी भूमि पर सैन्य अड्डे की स्थापना के बाद समुद्र आधारित व्यापार/ऊर्जा क्षेत्रों में निवेश के रक्षण हेतु पस्चिमीं हिन्द महासागर में और सैन्य अड्डों की स्थापना के संकेत दिए हैं। हिन्द महासागर परिधि के छोटे द्वीपीय राष्ट्रों सेशेल्स, मेडागास्कर, मारीशस के साथ पत्तनों के आधुनिकीकरण, आवश्यक लाजिस्टिक्स सुविधा विस्तार, जहाज़ आधारित सूचना संग्रहण पर आवश्यक समझौता कर रहा है। परन्तु भारत चीन के इस तरह के प्रयासों से काफी दूर है। परन्तु चीन के विरुद्ध भारत को अमरीका एवं जापान के साथ आर्थिक/ सैन्य भागीदारी का विस्तार/अभिवृद्धि करने में पर्याप्त सफलता मिली है।

भारत में एक परम्परागत मान्यता थी कि भारत एवं चीन के मध्य भूमि सीमा विवाद के कारण अविश्वास/प्रतिस्पर्धा अपने स्वरूप में मैरीटाइम न होकर स्थलीय/महाद्वीपीय है। परन्तु बी०आर०आई०/एम०एस०आर०आई० के अधीन भारत की मैरीटाइम परिधि/निकट पड़ोस में अवस्थापना विकास गतिविधियों में तीव्र वृद्धि से भारत चीन के सैन्य घेराव की आशंका से ग्रस्त है। भारत चिन्तित है कि उत्तर के भारत–चीन स्थल सीमा विवाद का प्रभाव प्रायद्वीपीय दक्षिण भारत पर पड़ सकता है। वहीं दूसरी ओर चीन भी चिंतित है कि भविष्य में सीमा–विवाद को लेकर उत्पन्न किसी आकस्मिकता की परिस्थिति में भारत उसकी नौपरिवहन की स्वतंत्रता अर्थात नौ परिवहन आपूर्ति लाइन अर्थात स्लाक्स को बाधित कर सकता है। क्योंकि मध्यपूर्व एवं अफ्रीका से आने वाली आयातित ऊर्जा संसाधनों की आपूर्ति/चीन में उत्पादित विनिर्मित वस्तुओं/उत्पादों की वैश्विक आपूर्ति इन्हीं स्लाक्स की सुरक्षा पर निर्भर है। चीन द्वारा आयातित ऊर्जा संसाधनों की पहुंच/विनिर्मित वस्तुओं की वैश्विक आपूर्ति हिन्द महासागर क्षेत्र के सकरे चोकप्वाइंट्स पर आश्रित हैं। परन्तु चीन हिन्द महासागर में बहुत लचीला है क्योंकि यहां चीन के मैरीटाइम संप्रभुतागत दावों को कोई चुनौती नहीं है। चीन केवल भविष्य के किसी संभावित स्लाक्स अवरोध की आशंका को असफल करने, मलक्का दुविधा का निवारण और उस पर अपनी निर्भरता को कम करने के वैकल्पिक मैरीटाइम विकल्पों को क्रियान्वित कर रहा है। चीन प्रथकतावाद से ग्रसित अपने पूर्व की तुलना में भूआवेष्ठित पस्चिमी क्षेत्र सिन्जियांग एवं दक्षिणी युन्नान प्रान्त की हिन्द महासागर तक भूमिगत पहुंच को सुनिश्चित करना चाहता है। परंतु हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती मैरीटाइम गतिविधियों/नौसैन्य उपस्थिति के सैन्य प्रयोजनों से इंकार नहीं किया जा सकता है। क्योंकि चीन आर्थिक सहायता द्वारा मैरीटाइम दक्षिण एशिया के छोटे राष्ट्रों को अपने हितों के लिए प्रयोग कर सकता है।

हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती आर्थिक और रणनीतिक पहुंच को भारत अपने परंपरागत प्रभाव क्षेत्र में हस्तक्षेप मानता है। परिणामस्वरुप भारत ने अपनी मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति को अस्तित्वगत प्रतिरोध रणनीति से शत्रु के विरुद्ध नकार प्रतिरोध में परिवर्तित कर लिया है। बी०आर०आई० के अन्तर्गत म्यामांर एवं पाकिस्तान में व्यापार कोरिडोर, तेल एवं गैस पाइपलाइन, सीपैक, सीमैक की स्थापना से भारत चिंतित हैं। क्योंकि यह सभी अवस्थापना विकास ड्युल यूज़ फैसिलिटी अर्थात सिविल/सैन्य प्रयोग की आशंका से युक्त हैं। सीपैक भारत की संप्रभुता का उल्लघंन करता है। सीमैक दर्शाया चीन भारत के बिल्कुल निकट आ गया है। युद्ध/आकस्मिकता की स्थिति में भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों के लिए एक बड़ी समस्या रहेगी जबकि यह क्षेत्र पहले से ही प्रथकतावाद से ग्रसित हैं। मैरीटाइम दक्षिण एशिया में भारत की चिन्ताएं मुख्यतरू बी०आर०आई०/एम०एस०आर०आई० को लेकर हैं। भारत हिन्द महासागर में चीन के लम्बी अवधिक मैरीटाइम रणनीतिक एजेंडे को लेकर परेशान है। हिन्द महासागर में चीन का बढ़ता सैन्यीकरण/चीन की डेब्ट ट्रैप डिप्लोमेसी भारत को निरन्तर परेशान करती है। भारत की चिन्ता है कि चीन मैरीटाइम दक्षिण एशियन क्षेत्रीय सुरक्षा परिदृश्य में भारत की प्रमुखता की स्थिति को चुनौती दे रहा है। मोती की माला रणनीति ने हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन के इरादों को लेकर भारत के रणनीतिकारों में चिंता उत्पन्न की है। कि भारत एवं चीन के मध्य सीमा विवाद के कारण जो कटुता है उसका प्रभाव मैरीटाइम क्षेत्र पर पड़ सकता है।

चीन दक्षिण एशिया के प्रत्येक राष्ट्र के साथ इस प्रकार के सम्बन्ध विकसित कर रहा है कि जिसमें भारत के लिए कोई स्थान न बचे। चीन के दक्षिण एशिया के छोटे राष्ट्रों के साथ आर्थिक/सैन्य संबंध मजबूत हुए हैं। भारत एक लम्बे समय तक दक्षिण एशिया में नेट सेक्युरिटी प्रोवाडर की भूमिका में रहा है। बंगलादेश का निर्माण भारत के सहयोग से हुआ। नेपाल में राणा तानाशाही का अनर्थ भारत की सैन्य मदद से हुआ। श्रीलंका में तमिल उग्रवाद के दमन हेतु भारत ने अपनी सेनाएं भेजी। मालदीव में गयूम शासन के तख्तापलट के विरुद्ध आपरेशन कैक्टस चलाया। परन्तु चीन द्वारा भारत के पड़ोस में मैरीटाइम अवस्थापना विनिर्माण प्रयासों के कारण सम्बन्ध अधिक गहरे कर लिए हैं। इन राष्ट्रों ने भारत की तुलना में चीन के साथ व्यापार संबंध को बढ़ाने के विकल्प को चुना है। यह राष्ट्र चीन के सैन्य हथियार निर्यात के बेहतरीन केन्द्र के रूप में उभरे हैं। परिणाम स्वरुप दक्षिण एशिया में भारत की प्रभुत्व की स्थिति मिश्रित हो गई है। दक्षिण एशिया के यह छोटे राष्ट्र चीन को भारत के परम्परागत प्रभाव की स्थिति के विरुद्ध एक संतुलनकर्ता के रूप में प्रयुक्त कर रहे हैं। अर्थात दक्षिण एशिया के राष्ट्र चीन को एक अपतटीय संतुलनकर्ता के रूप में स्थापित कर रहे हैं। भारत के साथ अपने संबंधों में चीन के बढ़ते प्रभाव को सौदेबाजी के यंत्र के रूप में प्रयुक्त कर रहे हैं। आज दक्षिण एशिया के राष्ट्र सार्क का पुनर्गठन इस प्रकार चाहते हैं ताकि भारत के प्रभुत्व की अभिव्यक्ति को रोका जा सके। बांग्लादेश ने सार्क के पर्यवेक्षक सदस्य के रूप में चीन का नाम प्रस्तावित किया। बांग्लादेश ने भी जल बंटवारे और ऊर्जा व्यापार प्रस्तावों के मुद्दे को लेकर भारत से दूरी बना रहा है।

भारत एवं चीन के मध्य एक असमानता है। जहां एक ओर भारत के पास भूटान को छोड़कर क्षेत्रीय सहयोगियों के मज़बूत नेटवर्क का आभाव है। वहीं दूसरी ओर व्यापार/अवस्थापना विकास प्रोजेक्ट्स सहायता के द्वारा चीन ने दक्षिण एशिया के राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध मज़बूत किया है। चीन का इन राष्ट्रों के साथ सैन्य जुड़ाव भारत के द्विपक्षीय संबंधों को कमज़ोर/शून्य कर देगा। चीन पाकिस्तान, बंग्लादेश, श्रीलंका का सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता है। दक्षिण एशिया के राष्ट्रों के साथ चीन की निकटता ने क्षेत्र में भारत की तुलना में व्यापारिक एवं आर्थिक स्थिति को अधिक मज़बूत किया है। नेपाल एवं भूटान के साथ चीन की प्राथमिक रणनीतिक चिन्ता इनकी तिब्बत से निकटता है। तिब्बती शरणार्थियों की नेपाल में व्यापक उपस्थिति है। नेपाल एवं भूटान दो ऐसे देश हैं जिनकी भारत और चीन से सीमाएं लगती है। दोनों भूआवेष्ठित हैं। दोनों भारत के लंबे समय तक संरक्षित राज्य रहे हैं। लेकिन यहां भी चीन अपने प्रभाव को विस्तारित करने के रणनीतिक प्रयास कर रहा है।

दक्षिण एशिया में भारत का लम्बे समय तक प्रभुत्व का कारण छोटे राष्ट्रों की तुलना में उसकी आर्थिक एवं सैन्य संसाधन क्षमता बेहतर थी। 2008 की वैश्विक आर्थिक मन्दी के बाद अमरीका एवं भारत की सापेक्षिक आर्थिक गिरावट को चीन में रणनीतिक अवसर के रूप में देखा गया। चीन ने रिज्युविनेशन आफ चाइनीज़ नेशन के अनिवार्य अंग के रूप में लो प्रोफाइल नीति का परित्याग करके स्ट्राइविंग बार एचीवमेंट्स की रणनीति अपनाई। तथा गो–ग्लोबल की रणनीति के अन्तर्गत सुदूर समुद्र संरक्षण अभियान हेतु मैरीटाइम महान शक्ति बनने हेतु नील जल सेना/विश्वस्तरीय नौसेना का लक्ष्य रखा। परन्तु आज भारत को चीन की बढ़ती साझेदारी गतिविधियों से चुनौती मिल रही है। चीन की बढ़ती आर्थिक/सैन्य गतिविधियों से दक्षिण एशिया का परिवेश प्रतिस्पर्धी बन गया है। और दक्षिण एशिया के राष्ट्र इस परिस्थिति को अपने लाभ के लिए सौदेबाजी के रूप में प्रयुक्त कर रहे हैं। दक्षिण एशिया में भारत की प्रमुखता की स्थिति को चुनौती चीन ने दी है क्योंकि वह दक्षिण एशिया की यथास्थिति को परिवर्तित करने हेतु साझेदारी में वृद्धि की है। इससे क्षेत्र की सुरक्षा गतिशीलता में तीव्र परिवर्तन एवं द्वन्द का जन्म हुआ है। एक सौदेबाजी से युक्त परिवेश का निर्माण हुआ है।

हिन्द महासागर में भारत चीन मैरीटाइम सम्बन्धों पर महाद्वीपीय/भूभागीय सीमा विवाद का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता हैं। हिन्द महासागर में भारत की चिन्ता का मुख्य कारण दोनों के रणनीतिक/सामरिक प्रेरकों में मतभेद/अन्तर है। हिन्द महासागर में दोनों अपनी भूमिका को लेकर परस्पर भिन्न मत रखते हैं। दोनों में भूमिका की वैधता/सापेक्षिक स्थिति को लेकर मतभेद हैं। भारत का हिन्द महासागर को लेकर मालिकाना दृ ष्टिकोण एवं चीन की बढ़ती उपस्थिति के प्रति गैर–क्षेत्रीय शक्ति का भाव रखना है। चीन बार–बार इसके आर्थिक प्रयोजन को स्पष्ट करता है। परन्तु हिन्द महासागर में चीन के प्रयास अपने स्वरूप में डुएल यूज़ की प्रवृत्ति रखते हैं। अर्थात चीन द्वारा हिन्द महासागर में विकसित आधारभूत ढांचे के सिविल/सैन्य प्रयोजन से इंकार नहीं किया जा सकता है। हिन्द महासागर में भारत का मालिकाना दृष्टिकोण अर्थात हिन्द महासागर को हिन्द का महासागर/स्वाभाविक प्रभाव क्षेत्र/केन्द्रीय भूमिका के दावे उसकी आर्थिक एवं सैन्य क्षमता से मेल नहीं खाते हैं। चीन भारत के इस प्रकार के किसी दावे को स्वीकार नहीं करता प्रतीत होता है। अर्थात हिन्द महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुद्दा भारत में भावनात्मक चिंताओं को जन्म देता है। हालांकि हिन्द महासागर में चीन का रणनीतिक इरादा स्लाक्स की असुरक्षा की सम्भावना पर केंद्रित है। अर्थात एक सक्षम प्रतिस्पर्धी अमरीका/भारत किसी आकस्मिकता की स्थिति में स्लाक्स का अवरोध न कर दें। चीन अस्थिर राज्यों मे प्रोजेक्ट्स में निवेश की सुरक्षा हेतु भी नौसैन्य उपस्थिति/शक्ति प्रक्षेपण की क्षमता बढ़ाना चाहता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के दायित्वों की पूर्ति में सहयोग हेतु सुदूर समूद्र अभियान संचालित करना चाहता है। हिन्द महासागर की परिधि में स्थित राष्ट्रों के साथ निकट आर्थिक/सैन्य सम्बन्ध स्थापित करना, हिन्द महासागर में न्यूनतम नौसेन्य निवारण क्षमता स्थापित करना। हिन्द महासागर तक अपने भूआवेष्ठित राज्यों की सीधी पहुंच सुनिश्चित करना। मलक्का दुविधा के निवारण हेतु विविध/वैकल्पिक परिवहन मार्गों का निर्माण करना शामिल है।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में चीन की हिन्द महासागर में कोई भौतिक/नौसैन्य उपस्थिति नहीं थी। हिन्द महासागर में चीन की भौतिक/ नौसैन्य उपस्थिति का आरम्भ 2008 में अदन की खाड़ी में पायरेसी के विरुद्ध वैश्विक अभियान में चीन की सहभागिता से आरम्भ होता है जब उसने अपनी नौसैन्य भागीदारी के अंग के रूप में पहली बार अपनी सेनाओं तैनाती की थी। इसके बाद चीन निरन्तर पस्चिमीं हिन्द महासागर में एंटीपायरेसी अभियान के नाम पर, उत्तरी हिंद महासागर में बी०आर०आई०/एम०एस०आर०आई० प्रोजेक्ट्स में निवेश की सुरक्षा के नाम पर एवं पूर्वी हिंद महासागर में मलक्का दुविधा के निवारण के नाम पर लगातार अपनी सैन्य उपस्थिति को सही ठहराता रहा है। हिन्द महासागर में आधारभूत संरचना विकास कार्यक्रम के नाम पर चीन अपनी नौसैन्य उपस्थिति को सरदारी बनाने का प्रयास कर रहा है। चीन ने अरब सागर में तीन सर्फेस वैसेल भी तैनात कर रखा है। उत्तरी हिंद महासागर में नाभिकीय आक्रमण सबमरीन की तैनाती चीन के इरादों को स्पष्ट करती है। चीन के नौसैन्य सिद्धांत में उल्लिखित नील जल सेना क्षमता संवर्द्धन चीन के सुदूर समुद्री हितों के संरक्षण अभियानों को रेखांकित करता है। चीन के श्वेत रक्षा प्रपत्र 2015 में भी सुदूर समुद्र रक्षण तैनाती के संकेत दिये गये जब चीन की मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति को अपतटीय जल संरक्षण से खुले समुद्र संरक्षण की रणनीति में परिवर्तित कर दिया गया। चीन के ऊर्जा निवेश, सुदूर नागरिकों के हित संरक्षण, इवैकुएशन अभियान, मानवीय सहायता अभियानों के परिचालन हेतु गो–ग्लोबल की रणनीति को अपनाया गया। चीन पूर्व की तुलना में हिंद महासागर में अधिक रूचि ले रहा है इसी कारण भारत में चीन की हिंद महासागर रणनीति को लेकर व्यापक चिन्ताएं अभिव्यक्त की जा रही हैं। हिन्द महासागर में चीन के प्रयासों को रणनीतिकार मोती की माला रणनीति, दो–महासागरों की रणनीति, सुदूर समुद्र संरक्षण की रणनीति, पस्चिम विरोधी घेराबन्दी की रणनीति, विस्तारित पड़ोस की रणनीति का नाम देते हैं।

चीन द्वारा अमरीका की शीतयुद्धकालीन नौसैन्य रणनीति का अनुसरण किया जा रहा है। चीन मोती की माला रणनीति के अन्तर्गत स्लाक्स के सहारे लीज़ द्वारा अर्जित आधुनिक क्षमताओं से युक्त विश्व स्तरीय पत्तनों की एक श्रृंखला आधुनिकीकृ त/निर्मित कर रहा है। विदेशी भूमि पर नौसैन्य अड्डों की स्थापना द्वारा अमरीका की तरह अग्रिम सैन्य उपस्थिति/तैनाती कर रहा है। चीन द्वारा जिबूती में अपने प्रथम विदेशी नौसैन्य अड्डे की स्थापना करके अपनी उस परम्परागत रणनीति में परिवर्तन कर दिया गया जिसमें वह लम्बे समय से विदेशी भूमि पर सैन्य तैनाती को नकारता था। चीन ने अपनी एक अन्य परम्परागत रणनीति का त्याग कर दिया जिसमें स्थल की तुलना में समुद्र को कम महत्व दिया जाता था। आज चीन मैरीटाइम हितों, अधिकारों, समुद्र पारीय हितों, ऊर्जा निवेश के रक्षण को चीन की संप्रभुता का अभिन्न अंग मानता है। स्लाक्स का रक्षण ऊर्जा आपूर्ति को अबाधित बनाने का अभिन्न हिस्सा है। चीन की निर्यात उन्मुख अर्थव्यवस्था की वर्तमान गति आयातित ऊर्जा आपूर्ति/विनिर्मित उत्पादों की वैश्विक पहुंच पर निर्भर है। चीन का आर्थिक विकास साम्यवादी शासन की वैधता का आधार है। चीन में मैरीटाइम महान शक्ति बनने की बात चीन के नौसैन्य राष्ट्रवाद का अभिन्न अंग है।

हिन्द महासागर में निकटता की दृष्टि से चीन की तुलना में भारत भौगौलिक लाभ की स्थिति में है। भारत की तुलना में चीन की भौगौलिक हानि की स्थिति उसे प्रेरित करती है कि वह पत्तनों तक पहुंच, पत्तनों पर आवश्यक लाजिस्टिक्स सहायता सुविधा, रिफ्युलिंग सुविधा का निर्माण करके भौगोलिक दूरी की दुविधा का निवारण कर सके। हिन्द महासागर में सैन्य शक्ति प्रदर्शन की क्षमता पर एक बाधा चीन के तट/प्रयत्नों से उसकी दूरी लाजिस्टिक्स सुविधा के अभाव की समस्या उत्पन्न करती है। इसी से हिन्द महासागर में नौसैन्य बेड़े की तैनाती को बल मिलता है। हिन्द महासागर में चीन एक स्थायी उपस्थिति को बनाने के प्रयासों को लेकर चीन गम्भीर है। भारत के निकट वैकल्पिक परिवहन मार्ग बना रहा है। वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों पर काम कर रहा है। हिंद महासागर में चीन की इन मैरीटाइम गतिविधियों पर भारत ने निरन्तर प्रतिकूल प्रतिक्रिया दी है।

सीपैक का विरोध किया है। उत्तर पूर्वी भारत के प्रथकतादियों के म्यांमार में आश्रय का विरोध किया है। श्रीलंका (हब्बनटोटा) म्यामांर (क्योक्प्यु) बंगलादेश (चिटगांग) पाकिस्तान (ग्वादर) इत्यादि में पत्तनों को लीज़ पर लेने के तरीकों/आर्थिक निवेश के परिणामस्वरूप चीन की डेब्ट ट्रैप रणनीति में इन राष्ट्रों के फंसने/अवस्थापना सुविधाओं के डुअल–यूज़ (सिविल/सैन्य) की संभावना पर भारत ने लगातार चिन्ताएं व्यक्त की हैं।

हिन्द महासागर में चीन के बढते नौसैन्य पदचिन्ह/नौसैन्य उपस्थिति/नौसैन्य विस्तार/ पड़ोसियों के साथ सैन्य आपूर्ति भारत के लिए एक मैरीटाइम सुरक्षा दुविधा को जन्म दिया है। क्योंकि सीमित आर्थिक संसाधन उसे चीन के मार्ग का अनुसरण करने की इजाज़त नहीं देते हैं। भारत ने इस सुरक्षा दुविधा के निवारण हेतु अपने नौसैन्य आधुनिकीकरण की गति को तीव्र किया है। अमरीका से रणनीतिक साझेदारी/निकटता को व्यवहारिक बनाया है। एक्टर ईस्ट रणनीति के अन्तर्गत दक्षिण पूर्वी एशिया के राष्ट्रों जापान, वियतनाम, फिलीपींस, थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया के साथ रणनीतिक सहयोग में वृद्धि के द्वारा चीन के विरुद्ध एक साफ्ट संतुलनकारी गठबन्धन को आकार दे रहा है। इन सभी राष्ट्रों का चीन के साथ पूर्वी चीन सागर/दक्षिणी चीन सागर में परस्पर विरोधी दावों मैरीटाइम विवाद है। हिन्द महासागर में भारत ही एक ऐसा राष्ट्र है जो चीन के नौसैन्य विस्तार/उभरती मैरीटाइम उपस्थिति से सार्वधिक प्रभावित है। हिन्द महासागर भारत का बैकयार्ड/विशेष रणनीतिक क्षेत्र है। चीन निरन्तर भारत के निकट के परम्परागत प्रभाव क्षेत्र में मैरीटाइम एसेट्स के निर्माण/समृद्ध पत्तन सुविधाओं के विकास दर्शाया यथास्थिति को परिवर्तित करने/परम्परागत शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में करने का प्रयास कर रहा है। हिंद महासागर में प्रशान्त महासागर में चीन के मौजूदा मैरीटाइम इरादे यधपि नरम हैं। परन्तु भूमि सीमा विवाद के कारण भारत चीन की मैरीटाइम गतिविधियों को चुनौतीपूर्ण मानता है। गलवान स्टैंड आफ के समय हिन्द महासागर में चीन की नौसैन्य उपस्थिति में तीव्र वृद्धि देखी गयी थी। अर्थात चीन की नौसैन्य उपस्थिति और बार्डर स्टैंड आफ में सीधा सम्बन्ध है।

चीन को पस्चिमी प्रशान्त महासागर में अमरीका के नेतृत्व में एक बहुराष्ट्रीय/बहुस्तरीय नौसैन्य गठबंधन का सामना करना पड़ रहा है। वहीं हिन्द महासागर में चीन एक भारत विरोधी गठबंधन/पुनर्संलग्नता को आकार दे रहा है। चीन की पाकिस्तान से निकटता उसके भारत विरोधी स्वभाव का परिणाम है। इसी को सामान्यतः चीन–पाकिस्तान धुरी कहा जाता है। चीन पाकिस्तान को आर्थिक/सैन्य सहायता द्वारा पोषित करके उसे भारत के उदय के विरुद्ध प्रयुक्त कर रहा है। म्यांमार में इरावदी कोरिडोर में भारी निवेश/सैन्य शासन को आर्थिक सहयोग भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों की सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा है। म्यांमार और बंगलादेश में क्रमशः क्योक्पयु/चिटगांग पत्तनों में निवेश के कारण चीन बंगाल की खाड़ी के बहुत निकट आ चुका है। चीन की प्राथमिक चिन्ता अमरीका के चीन के सीमितिकरण हेतु एंटी चाइना कंटेनमेन्ट प्लान में भारत की बढ़ती भूमिका पर केंद्रित है। भारत नौसैन्य आधुनिकीकरण के अतिरिक्त चीन को काउंटर करने हेतु जापान, अमरीका के साथ रणनीतिक साझेदारी बढ़ा रहा है। परन्तु भारत का अमरीका से जनतंत्र के मुद्दे पर व्यापक मतभेद हैं। अमरीका को ईरान के विरुद्ध संभावित युद्ध की स्थिति में भारत की तुलना में पाकिस्तान की अधिक आवश्यकता पड़ेगी।

हिन्द महासागर में चीन की मैरीटाइम महत्वाकांक्षा और उसकी नौसैन्य क्षमता में एक महत्वपूर्ण द्वंद्व है। यह आशंकाओं एवं चुनौतियों से युक्त है। क्योंकि चीन अपने तट से सुदूर समुद्र संरक्षण के दावों की पूर्ति बिना नील जल सेना क्षमता अर्जित एवं संवर्धित किये नहीं कर सकता है। चीन का नील जल सेना का दावा बिना लम्बी दूरी के वायु सुरक्षा तंत्र, वायुयान वाहक पोत, बड़े युद्धपोत के बिना पूर्ण नहीं हो सकता है। क्योंकि चीन को सुदूर समुद्र में किसी भी नौसैन्य अभियान को संचालित करने हेतु व्यापक लॉजिस्टिक्स सपोर्ट्स, रिसप्लाई और मेंटेनेंस सुविधा अनिवार्य है। इसी कारण चीन पूर्वी अफ्रीकी तट, अरब सागर, उत्तरी हिन्द महासागर, पश्चिमी हिन्द महासागर और पूर्वी हिन्द महासागर में निरंतर इन सुविधाओं का विस्तार कर रहा है। हिन्द महासागर के तटीय देशों अर्थात मैरीटाइम दक्षिण एशियाई राष्ट्रों को अपने प्रभाव क्षेत्र में लाने का प्रयास कर रहा है। और दक्षिण एशिया के परम्परागत शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में करने का प्रयास कर रहा है। चीन बी० आर० आई० के अन्तर्गत आधारभूत संरचना विकास हेतु व्यापक आर्थिक सहायता के माध्यम से इनको अपने प्रभाव क्षेत्र में लाने का प्रयास कर रहा है। चीन इन सभी राष्ट्रों में लम्बे समय से सैन्य आपूर्तिकर्ता की भूमिका का निर्वहन कर रहा है। चीन के बाहरी व्यापार में इन राष्ट्रों की बड़ी हिस्सेदारी है। यह सभी आर्थिक एवं सैन्य संसाधनों के लिए चीन पर पूर्णतः निर्भर हैं। चीन साफ्टपावर डिप्लोमेसी और डेब्ट ट्रैप्ड डिप्लोमेसी के अंतर्गत उत्तरी हिन्द महासागर में भारत के प्रभाव को कम कर रहा है। उत्तरी हिन्द महासागर को अपने प्रभाव के क्षेत्र में परिवर्तित कर रहा है।

एलेन बूज़ हेमिल्टन द्वारा प्रस्तुत (2004) मोती की माला रणनीति की अवधारणा में उत्तरी हिन्द महासागर में चीन की बढ़ती स्थायी सैन्य उपस्थिति को भारत को घेरने के चीन के प्रयासों के रूप में रेखांकित किया गया है। मोती की माला रणनीति के अन्तर्गत पूर्वी, उत्तरी, पस्चिमी हिन्द महासागर में जिबूती (सोमालिया), ग्वादर (पाकिस्तान), हंबनटोटा (श्रीलंका), चिटगांग (बंगलादेश), क्योक्प्यु (म्यांमार) इत्यादि इन सभी पत्तनों के आधुनिकीकरण एवं उच्चीकरण के प्रयासों को लीज़ द्वारा अर्जित अधिकार अथवा द्विपक्षीय समझौतों द्वारा निर्मित रणनीतिक साझेदारी दर्शाया अपनी उपस्थिति को मजबूत और स्थायी बना रहा है। यद्यपि चीन निरन्तर यह स्पष्ट करता रहा है कि इन पत्तनों का उद्देश्य केवल व्यापारिक है। अर्थात हिन्द महासागर में आवश्यक लाजिस्टिक्स सपोर्ट प्वाइंट्स की स्थापना करना है। परंतु भविष्य में इनके नौसैन्य प्रयोग की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। चीन कहता है कि इनका उद्देश्य मैरीटाइम व्यापारिक मार्गों अर्थात स्लाक्स के संरक्षण पर केंद्रित है। परन्तु भारत निरन्तर अपनी नौसैन्य गतिविधियों की जासूसी का आरोप चीन पर लगाता रहा है। भारत चीन के मध्य गलवान स्टैंड–आफ के समय उत्तरी हिंद महासागर में चीन को नौसैन्य गतिविधियों में अभिवृद्धि देखी गयी थी।

हिन्द महासागर में चीन और भारत की मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति में प्रतिस्पर्धा नज़र आती है। क्योंकि चीन हिन्द महासागर क्षेत्र के परम्परागत शक्ति सन्तुलन को अपने पक्ष में करने का प्रयास कर रहा है। वहीं भारत हिन्द महासागर में अपने परम्परागत प्रभाव क्षेत्र, केंद्रीय भूमिका को पुनर्जीवित करने के प्रयास कर रहा है। अमरीका, चीन के महान मैरीटाइम शक्ति के रूप में उदय के सीमितिकरण हेतु भारत के साथ रणनीतिक सहयोग में वृद्धि कर रहा है। चीन के विरुद्ध भारत, अमरीका का एक भरोसेमंद सहयोगी के रूप में उभरा है। परन्तु दक्षिण एशिया में जनतंत्र के मुद्दों जैसे बंगलादेश, म्यांमार, श्रीलंका को लेकर भारत और अमरीका के मध्य कुछ मतभेद हैं। भारत एक स्वतंत्र विदेश नीति का अनुसरण करता है। यह अमरीका की रणनीति से मेल नहीं खाती है। भारत और चीन के मध्य सीमा विवाद द्वारा निर्मित पारस्परिक शत्रुता का भाव एवं चीन का हिन्द महासागर की परिधि में स्थित राष्ट्रों के साथ बढ़ती रणनीतिक एवं सैन्य भागीदारी को भारत अपने परम्परागत प्रभाव क्षेत्र का सीमितिकरण मानता है। बी ०आर०आई० में भारत के अतिरिक्त समूचे दक्षिण एशिया के राष्ट्र शामिल हैं। इस सन्दर्भ में चीन के व्यवहार के

कारण भारत अलग–थलग पड़ गया है। भारत की नेट सेक्युरिटी प्रोवाइडर की भूमिका में कमी प्रकट हुई है। आज हिन्द महासागर लाइटोरल के यह राष्ट्र व्यापारिक आदान–प्रदान,निवेश एवं सैन्य सहयोग के मोर्चे पर भारत की तुलना में चीन के अधिक निकट हैं। अर्थात भविष्य में सीमा विवाद का प्रभाव हिन्द महासागर के मैरीटाइम परिक्षेत्र पर पड़ने की प्रबल सम्भावना है। जैसे चीन की डोकलाम स्टैण्ड आफ के समय हिन्द महासागर क्षेत्र में सैन्य गतिविधियां बढ़ गयी थीं।

चीन ने श्वेत रक्षा प्रपत्र 2019 में नौसैन्य आधुनिकीकरण के रणनीतिक स्वरूप में व्यापक परिवर्तन के संकेत दिए गए हैं। चीन ने अपनी नौसेना को निकट समुद्री नौसेना से सुदूर समुद्र संरक्षण नील जल सेना में परिवर्तित करने की उद्घोषणा की है। हिन्द महासागर क्षेत्र के तटीय क्षेत्रों में स्थित राष्ट्र चीन की निर्यात उन्मुख अर्थव्यवस्था के लिए बड़े बाज़ार हैं। चीन के निर्यात में मध्यपूर्व, पस्चिमी हिन्द महासागर, उत्तरी हिन्द महासागर के निकट के छोटे देशों की बड़ी आर्थिक एवं सैन्य हिस्सेदारी है। चीन के आयात में मध्यपूर्व एवं अफ्रीका के प्राकृतिक ऊर्जा संसाधनों पर निर्भरता है। चीन की राज्य स्वामित्व वाली फर्म ओवरसीज़ परिचालन कर रही हैं। उनका हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र के राष्ट्रों में भारी निवेश है। दो मिलियन से अधिक चीन के लोग ओवरसीज़ कार्य कर रहे हैं। बी०आर०आई० के अंतर्गत चीन के आधारभूत संरचना निर्माणतंत्र सम्पूर्ण हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में फैला है। अर्थात चीन नौसेना को सुदूर समुद्री अभियानों एंटी–पायरेसी, मानवीय सहायता अभियान, इवैकुएशन अभियान, सुदूर निवेश संरक्षण अभियान, समुद्री संसाधनों के एक्सप्लोरेशन गतिविधियों को संचालित करने हेतु नील जल सेना की क्षमता के निकट पहुंच रहा है। परन्तु अमरीका की तुलना में अभी कुछ पीछे है।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि हिन्द महासागर में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति अपनी आरंभिक अवस्था में है। चीन ताइवान, पूर्वी चीन सागर, दक्षिणी चीन सागर को लेकर उत्पन्न कुछ आकस्मिकताओं की संभावनाओं के परिप्रेक्ष्य में हिन्द महासागर में अपनी मैरीटाइम गतिविधियों/उपस्थिति को व्यवहारिक बना रहा है। हिन्द महासागर में स्लाक्स संरक्षण/नौ परिवहन की स्वतंत्रता/चोकप्वाइंट्स की नाकेबंदी के विरुद्ध आवश्यक नौसैन्य शक्ति प्रक्षेपण की स्थापना पर काम कर रहा है। चीन एक अन्य विकल्प को अपना सकता है कि वह अपनी ऊर्जा आपूर्ति परिवहन लाइन अर्थात स्लाक्स सुरक्षा/संरक्षण के लिए सैन्य साधनों की तुलना में कूटनीतिक/राजनीतिक साधनों को प्राथमिकता दे सकता है। हिन्द महासागर क्षेत्र की शान्ति/स्थिरता के लिए यही एक उपयुक्त विकल्प है। क्योंकि एक सक्षम/प्रतिरोधी नौसैन्य उपस्थिति के होते हुए भी किसी बड़ी शक्ति द्वारा उत्पन्न परम्परागत सुरक्षा व्यवधान/गैर राज्य अभिकर्ताओं द्वारा उत्पन्न गैर परम्परागत सुरक्षा चुनौतियों से स्लाक्स/चोकप्वाइंट्स को पूर्णतः संरक्षण चीन नहीं कर सकता है। एक बेहतर विकल्प यह है कि चीन व्यक्तिगत रूप से सैन्य शक्ति का प्रक्षेपण/प्रर्दशन करने के बजाय हिन्द महासागर क्षेत्र में सभी राष्ट्रों के सहयोग से एक सुरक्षित/स्थिर भू–राजनीतिक वातावरण का निर्माण करे। हिन्द महासागर क्षेत्र में परम्परागत/गैर–परंपरागत मैरीटाइम सुरक्षा चुनौतियों को लेकर भारत एवं चीन दोनों के समक्ष समान रणनीतिक हितों/साझा समस्याओं पर मिलकर कार्य करना चाहिए। भारत एवं चीन दोनों हिन्द महासागर क्षेत्र में एक समान सुरक्षा चुनौतियों जैसे पायरेसी, आतंकवाद, स्मगलिगं, ह्युमन ट्रैफिकिंग, गैर राज्य अभिकर्ताओं का सामना करते हैं। इन चुनौतियों का सामना करने हेतु दोनों को मिलकर एक सामंजस्य पूर्ण रणनीति का अनुसरण करना चाहिए। चीन भारत को सुदूर पूर्व में रूस से जो चीन के तट के निकट से गुजरने वाले आयातित गैस आपूर्ति जहाज़ों के नौपरिवहन की स्वतंत्रता के संरक्षण में सहायता कर सकता है। इसी प्रकार भारत के निकट के स्लाक्स से गुजरने वाले चीन के आयातित ऊर्जा संसाधनों/विनिर्मित उत्पादों के जहाज़ों के सुरक्षा हेतु सहयोग कर सकता है। परन्तु दोनों राष्ट्रों के मध्य सीमा विवाद, चीन–पाकिस्तान धुरी, परमाणु प्रसार, एशिया के नेतृत्व का प्रश्न, व्यापार असंतुलन, अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर कूटनीतिक विरोध इत्यादि मुद्दे दोनों के मध्य शंकाएं/चिन्ताएं जन्म देते हैं। भारत आशंका से ग्रसित होता है कि चीन उसको चारों ओर से घेर रहा है। हिन्द महासागर में उसके परंपरागत प्रभाव को सीमित कर रहा है। हिन्द महासागर की यथास्थिति में परिवर्तन कर रहा है। हिन्द महासागर के शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में कर रहा है। भारत के पड़ोसियों को उसके विरुद्ध खड़ा कर रहा है। हिन्द महासागर तटीय राष्ट्रों में डेब्ट–ट्रैप डिप्लोमेसी का अनुसरण कर रहा है। भारत के उदय को स्वीकार नहीं करता है। भारत का उनके पड़ोसियों से मतभेद को विस्तारित करके भारत को उसमें उलझाना चाहता है। भारतीय तक के समीप समुद्र की सतह में शोध डाटा संग्रहण के नाम पर भारत की सुरक्षा जासूसी कर रहा है। वहीं चीन भी भारत के प्रति आशंका/चिंताओं से ग्रसित है। चीन की प्रमुख चिन्ता भारत की जापान, अमरीका और वियतनाम से निकटता है। भारत अमरीका रणनीतिक साझेदारी को चीन के उदय के सीमितिकरण की रणनीति का अंग मानता है। भारत एवं वियतनाम के मध्य दक्षिणी चीन सागर में ऊर्जा उत्खनन समझौते को अपनी संप्रभुता का उल्लंघन मानता है। ताइवान के एकीकरण को लेकर हिन्द महासागर में संभावित स्लाक्स व्यवधान में अमरीका के सहयोग की आशंका से ग्रसित है। हिन्द महासागर में चीन उभरती सैन्य गतिविधियों/ सैन्य उपस्थिति के सैन्य निहितार्थ से आश्चर्य नहीं होना चाहिए। चीन पुरानी उभरती सैन्य शक्तियों के पारंपरिक मार्ग का अनुसरण कर रहा है। यह अपने तट से सुदूर क्षेत्रों में अपने सैन्य हितों के अनुरूप सैन्य अभियानों का विस्तार कर रहा है। पूर्व में चीन विदेशी भूमि पर सैन्य गतिविधियों/सैन्य अड्डों की स्थापना से इंकार करता था। परंतु सैन्य अड्डों की स्थापना को क्रियान्वित कर रहा है। हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ते कदम के सुरक्षा निहितार्थ मिश्रित हैं। चीन शांतिकाल में अपने क्षेत्रीय प्रभाव का विस्तार कर सकता है। परन्तु युद्धकाल में चीन की उपस्थिति अवसरों की तुलना में कमजोरी अधिक परिलक्षित करती हैं। चीन की बढ़ती उपस्थिति अपनी ऊर्जा आपूर्ति लाइन/नौ परिवहन की स्वतंत्रता के संभावित खतरों के विरुद्ध उपयुक्त समाधान को क्रियान्वित कर रहा है। चीन अपने बढ़ते व्यापारिक हितों का अनुसरण कर रहा है। किसी प्रकार के व्यवधान के खिलाफ अपनी ऊर्जा आपूर्ति/विनिर्मित उत्पादों की वैश्विक आपूर्ति लाइन को सुरक्षित करने की कोशिश कर रहा है। हालांकि हिन्द महासागर में चीन की उपस्थिति उसे अपने क्षेत्रीय प्रभाव को बढ़ाने की अनुमति दे सकता है। लेकिन किसी बड़े संघर्ष में चीन निर्मित सैन्य सुविधाएं/लाजिस्टिक्स सहायता सुविधा अत्यधिक असुरक्षित रहेंगी। हिन्द महासागर में शक्ति के प्रक्षेपण के लिए चीन के प्रयास अभी आरंभिक दौर में हैं। हिन्द महासागर क्षेत्र में सैन्य बलों को बनाए रखने हेतु आसपास के स्लाक्स के निकट के बिंदुओं पर आवश्यक सुविधाओं की विश्वसनीय पहुंच की आवश्यकता है। इसके लिए चीन को नील जल सेना क्षमता को अर्जित करना है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Friedberg LA. A contest for supremacy: China, America, and the struggle for mastery in Asia. W\.W. Norton and Company, 2011.
2. Brewster D. Indian and China at sea: Competition for naval dominance in the Indian Ocean. Oxford University Press, 2018.

3. Brewster D. India's ocean: The story of India's bid for regional leadership. Routledge, 2014.
4. Brewster D. India as an Asia-Pacific power. Routledge, 2012.
5. Mohan CR. Samudra manthan: Sino-Indian rivalry in the Indo-Pacific. Carnegie Endowment for International Peace, 2012.
6. Mohan CR, Singh H. Coping with China-India rivalry: South Asian dilemmas. World Scientific, 2023.
7. Ayres A, Mohan CR. Power realignments in Asia: China, India, and the United States. Sage Publication, 2009.
8. Sakhuja V, Prabhakar SL. Maritime security complexes of the Indo-Pacific region. ICFWA and CFPPR, 2022.
9. Sakhuja V. The maritime great game: India, China, US and the Indian Ocean. IPFWA, 2012.
10. White TJ. Joshua. China's Indian Ocean ambitions: Investment, influence, and military advantage. Global China Press, 2020.
11. Scobbell A, Saunders CP. The PLA beyond borders: Chinese military operations in regional and global context. National Defense University Press, 2021.
12. Dutton AP, Martinson DR. Beyond the wall: Chinese far seas operations. US Naval War College, 2015.
13. Cole DB. China's quest for great power: Ships, oil, and foreign policy. Naval Institute Press, 2016.
14. Grare F. The Indian Ocean as a new political and security region. Palgrave Macmillan, 2022.
15. Zhu C. India's ocean: Can China and India coexist. Springer, 2018.
16. Michel D, Sticklor R. Indian Ocean rising: Maritime security and policy challenges. Stimson, 2012.
17. Singh KA. India-China rivalry: Asymmetric no longer - An assessment of China's evolving perceptions of India. IDSA, 2021.
18. Mukherjee A, Mohan CR. India's naval strategy and Asian security. Routledge, 2016.
19. Kapur A. India and the South Asian triangle. Routledge, 2011.
20. Kapur A. India from regional to world power. Routledge, 2006.
21. Kapur A. Pakistan in crises. Routledge, 1991.
22. Ranade J. Strategic challenges- India in 2030. Harper Collins Publishers, 2022.
23. Malik M. China and India - Great power rivals. First Forum Press, 2011.
24. Shambaugh D. Power shift - China and Asia's new dynamics. University of California, 2005.
25. Shambaugh D. China goes global - The partial power. Oxford University Press, 2013.
26. Shambaugh D. China and the world. Oxford University Press, 2020.
27. Suresh R. The changing dimensions of security: India’s security policy options. Vij Books India Pvt Limited, 2015.
28. Small A. The China-Pakistan axis: Asia's new geopolitics. Oxford University Press, 2015.
29. Tom M. China's Asian dream: Empire building along the new Silk Road. Zed Books,2017.
30. Cole DB. Asian maritime strategies: Navigating troubled waters. Naval Institute Press, 2013.
31. Paul TV, Mukherjee A. India-China maritime competition: The security dilemma at sea. Routledge, 2011.
32. Karim MA. Is China encircling India: Asian political and economic issues. Nova Science Publishers, 2021.
33. Suresh R. Maritime security of India: The coastal security challenges and policy options. Vij Books India, 2014.
34. Athwal A. China-India relations: Contemporary dynamics. Routledge, 2007.
35. Grare F. The Indian Ocean as a new political and security region. Palgrave Macmillan, 2022.